त्याग और संयम का मूल्यांकन करने वाली जीवन शैली हो

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 28 फरवरी।

''मनुष्य का आचार व्यवहार दार्शनिक चिंतन के आधार पर बनता है। दो प्रकार के चिंतन हमारे सामने हैं। एक चिंतन यह रहा कि जीना है खूब भोग करना है, न आगे है, न पीछे, न पहले था और न बाद में है। आगे भविष्य की चिंता मत करो, खूब खाओ पीओ मौज करो पास में पैसा नहीं है तो कर्जा लेकर घी पीओ यही चिंतन आर्थिक मंदी का कारण बना। दूसरा विचार यह रहा कि मेरी आत्मा अहोपथिक है, पुनर्जन्म होने वाला है। मेरा अतीत है, मेरा अस्तित्व अतीत में भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा, मरने के बाद फिर नया जन्म होगा इसलिए मुझे केवल वर्तमान को ही नहीं जीना है, भविष्य को भी जीना है। यह देखना है कि मैं जो आज आचार-व्यवहार कर रहा हूं उसका परिणाम क्या होगा भविष्य में भी आगे कहीं जाना है।''

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने शनिवार को तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवरण में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि चार गतियां है - एक नर्क है, दूसरी तिर्यंच, तीसरी मनुष्य है और चौथी देवता है। व्यक्ति यह सोचता है कि मुझे आगे भी भी कहीं जाना है जन्म लेना तो फिर उसका आचार दूसरे प्रकार का होगा। वह व्यक्ति फिर इस भाषा में नहीं सोचता कि केवल खूब भोग करो, जैसे-तैसे धन कमाओ और खूब बड़प्पन का जीवन जीयो। वह यह सोचेगा कि मैं ऐसा आचरण करूं, ऐसा व्यवहार करूं कि कम से कम मनुष्य गति से नीचे तो नहीं जाऊं और विकास करूं तो देवगति में चला जाऊं। इस प्रकार का चिंतन आदमी की जीवन शैली को बदल देता है, आचार और व्यवहार को बदल देता है। वह फिर किसी के साथ क्रूर व्यवहार नहीं करेगा, वह किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा। वह धोखाधड़ी नहीं करेगा और वह ऐसा व्यवहार और आचरण नहीं करेगा जिससे निम्न गति के आयुष्य का बंध हो।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि दो प्रकार की जीवन शैलियां बन जाती है। एक भोगप्रधान जीवन शैली और एक त्याग और संयम को महत्त्व देने वाली जीवन शैली। त्याग और संयम का मूल्यांकन करने वाली जीवन शैली।

जब तक जीवन की यथार्थता को नहीं समझता और चिंतन की गहराई में नहीं जाता तब तक कोरा आसक्ति का जीवन जीता है, मोह मूर्च्छा का जीवन जीता है और जागते हुए भी नींद का जीवन जीता है।

आसक्ति प्रबल होती है जीवन के प्रति यथार्थ का चिंतन नहीं होता, आवश्यक है हम अपनी जीवन शैली के पीछे उसकी पृष्ठभूमि में दो प्रकार की विचार धाराएं हैं, दो दार्शनिक चिंतन हैं। एक पुनर्जन्म का और एक पुनर्जन्म के अभाव का।

हमें सारा निर्णय करना चाहिए अगर इस स्थिति को बदलना है तो पहले हमारी दार्शनिक चिंतन की धारा स्पश्ट होनी चाहिए। हर व्यक्ति के सामने होना चाहिए कि मेरा जीवन चालीस - पचास साठ, अस्सी का ही है या आगे भी कुछ है। अगर आगे है तो कुछ सोचना चाहिए।

एक धार्मिक व्यक्ति वर्तमान जीवन को भी सुधारता है अगला जन्म भी अच्छा होता है और उससे अगला जन्म भी अच्छा होता है। तीन जन्मों के बारे में चर्चा की गई। किंतु एक जन्म के बारे में भी नहीं सोचते तो फिर अगले और उससे अगले जन्म की बात कहां। इसलिए हर समझदार व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि दर्शन पर भी ध्यान दें। आज विज्ञान का बड़ा महत्त्व हो गया, किंतु व्यक्ति दार्शनिक चिंतन को भी नहीं भूले। अगर वर्तमान समाज को अच्छा बनाना है तो एक नया चिंतन करना आवश्यक है और वह नया चिंतन यह होगा कि केवल विज्ञान ही नहीं विज्ञान को छोड़ने की जरूरत नहीं। दर्शन और विज्ञान दोनों के समन्वय की जरूरत है। आचार्य तुलसी ने यह कार्य शुरू किया, हम भी कर रहे हैं कि अध्यात्म और विज्ञान का

समन्वय हो और हो रहा है कुछ लोग इसे समझने का प्रयत्न कर रहे हैं, बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी इस चिंनत में आये हैं और आ रहे हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि ज्ञान आधारभूत भी है किंतु कोरा ज्ञान अपूर्ण है। उसके साथा ज्ञानुरूप साधना हो जाए तब उसमें परिपूर्णता आती है। पूर्व जन्म को जानना अर्थात आत्मा के त्रैकालिक अस्तित्व को समझ लेना और जन्म-मरण की परंपरा को जान लेना आत्मा के अस्तित्व को जानने की बात है।

युवाचार्य महाश्रमण ने आगे कहा कि आश्रव के द्वारा ही जन्म-मरण है अन्यथा जन्म-मरण हो नहीं सकता। आश्रव न हो तो न पूर्वजन्म होगा और न पुनर्जन्म होगा। आश्रव के द्वारा चेतना कर्मों से आवृत हो जाती है। आश्रव के द्वारा कर्मों का कचरा भीतर आ जाता है।

अणुव्रत का 61वां वार्षिक अधिवेशन आज बीदासर में

बीदासर, 28 फरवरी।

अणुव्रत समिति बीदासर के तत्वावधान में तेरापंथ भवन स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में 1 व 2 मार्च को दो दिवसीय अणुव्रत का 61वां स्थापना दिवस आचार्य महाप्रज्ञ व युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित होगा। स्थानीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चौथमल बोथरा ने बताया कि इस दो दिवसीय अणुव्रत शिविर में बाहर से सभी अणुव्रत समिति के सदस्य भाग लेंगे। इसी श्रृंखला में 1 मार्च को मुमुक्षु सुमित कुमार को दीक्षा प्रदान की जाएगी।

- अशोक सियोल